अध्याय – 13

बाजार सन्तुलन
(Market Equilibrium)

साम्य का आशय –

साम्य (Equilibrium) शब्द लेटिन के (aequilibrium) शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है 'समान तुलन

प्रो. स्टिगलर – ''सन्तुलन वह स्थिति है जिसमें गति की शुद्ध प्रवृत्ति इस तथ्य पर बल देती हैं कि वह स्थिति आवश्यक रूप से आकस्मिक जड़ता की नहीं होती किन्तु इसके स्थान पर बलशाली शक्तियों को निष्प्रभाव करने की होती है।

प्रो. जे.के.मेहता के अनुसार – सन्तुलन का अर्थ है विश्राम की ऐसी स्थिति जिसकी विशेषता है परिवर्तन का अभाव।

प्रो. बोल्डिग ने स्थैतिक सन्तुलन को इस प्रकार व्यक्त किया है–''एक गेंद जो समान गति से लुढ़कती जा रही हो या इससे भी अच्छा उदाहरण एक वन का है जिसमें पेड़ उगते हैं, बढ़ते या नष्ट होते हैं परन्तु समूचे वन की संरचना में कोई परिवर्तन नहीं आता। यह सन्तुलन का यान्त्रिक उदाहरण है।''

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि साम्य का तात्पर्य जड़ता नहीं बल्कि गति में अपरिवर्तनशीलता से है।

बाजार सन्तुलन :–

बाजार सन्तुलन का तात्पर्य बाजार की उस स्थिति से है जहाँ पर बाजार में वस्तु की बाजार माँग व बाजार पूर्ति बराबर होती है। स्पष्ट है कि जब किसी वस्तु की मांग व पूर्ति में समानता स्थापित हो जाती है अर्थात अधिमांग व अधिपूर्ति शून्य हो तो वह अवस्था बाजार सन्तुलन कहलाती है। इसे ही मूल्य निर्धारण का सामान्य सिद्वान्त या मूल्य निर्धारण का मांग व पूर्ति सिद्धान्त भी कहा जाता है।

मार्शल की मान्यता थी कि वस्तु का मूल्य न तो वस्तु की मांग (उपयोगिता) से निर्धारित होता है और न ही वस्तु की पूर्ति (उत्पादन लागत) से निर्धारित होता है बल्कि वह तो वस्तु की मांग व पूर्ति दोनों की शक्तियों के द्वारा निर्धारित होता है।

बाजार सन्तुलन की व्याख्या निम्न घटकों से समझी जा सकती है।

(अ) मांग पक्ष –

उपभोक्ता किसी वस्तु की मांग क्यों करता है? वह किसी वस्तु का मूल्य देने हेतु क्यों तत्पर होता है? और वस्तु का अधिकतम कितना मूल्य दे सकता है? इन प्रश्नों की विवेचना से स्पष्ट होता है कि किसी वस्तु की मांग उसकी उपयोगिता के कारण की जाती है अर्थात वस्तु में उपभोक्ताओं की आवश्यकता को सन्तुष्ट करने का गुण ही उसकी मांग का कारण है। उपभोक्ता अपनी आवश्यकता को सन्तुष्ट करने हेतु वस्तु को प्राप्त करना चाहता है जिसके बदले में वह मुद्रा के रूप में कुछ त्याग करना चाहता है यही वस्तु का मूल्य होता है। जिस वस्तु की उपयोगिता अधिक होती है उसके लिये उपभोक्ता अधिक मूल्य देने हेतु तत्पर रहता है और जिस वस्तु की उपयोगिता कम होती है उसके लिये वह कम मूल्य देना चाहता है। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि किसी वस्तु की सीमान्त उपयोगिता से उसका मूल्य अधिक नहीं हो सकता। सीमान्त उपयोगिता ही मूल्य की अधिकतम सीमा होती है।

एक क्रेता जिस मूल्य पर वस्तु की एक निश्चित मात्रा क्रय करने हेतु तैयार हो उसे ''मांग मूल्य'' कहा जाता है। एक वस्तु के लिये अलग–अलग क्रेताओं की विभिन्न कीमतों पर मांग भी अलग–अलग होती है। प्रत्येक क्रेता की एक मांग अनुसूची होती है, बाजार के सभी क्रेताओं की मांग अनुसूचियों का योग करने पर बाजार मांग अनुसूची प्राप्त हो जाती है, जिससे यह प्रदर्शित किया जा सकता है कि विभिन्न मूल्यों पर बाजार में वस्तु की कितनी–कितनी मात्रा मांगी जाती है।

तालिका 13.1 बाजार मांग अनुसूची

वस्तु की कीमत रू.	विभिन्न उपभोक्ताओं की मांग (इकाइयों में)			योग बाजार माँग
	A	B	C	
5	6	8	11	25
10	5	7	10	22
15	4	6	8	18
20	3	5	7	15
25	2	3	4	9
30	1	2	3	6

व्याख्या :–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि वस्तु की कीमत में वृद्विहोने पर विभिन्न उपभोक्ताओं द्वारा मांगी गयी मात्रा कम होती जाती है माना कि बाजार में तीन उपभोक्ता हैं, जिनकी मांग विभिन्न कीमतों पर दर्शायी गयी है तालिका का विश्लेषण करने पर यह कहा जा सकता है कि वस्तु की कीमत बढ़ने पर बाजार मांग घट जाती है।

मांग वक्र

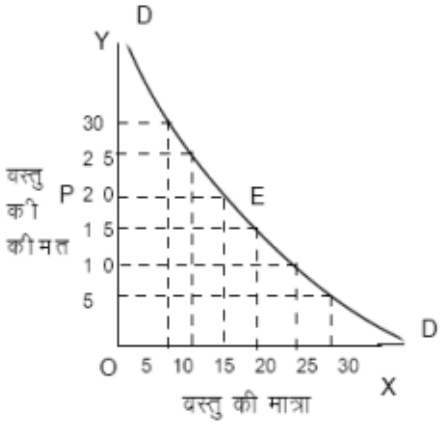

रेखाचित्र 13.1

रेखाचित्र की व्याख्या :–

रेखाचित्र में OX अक्ष पर वस्तु की मात्रा तथा OY अक्ष पर वस्तु की कीमत को दर्शाया गया है। अलग–अलग उपभोक्ताओं की मांग क्रमशः A, B, C रेखाचित्रों द्वारा दर्शाई गई हैं प्रत्येक उपभोक्ता के लिए मांग वक्र का ढाल ऋणात्मक होता हैं सभी उपभोक्ताओं की मांग का योग बाजार मांग वक्र द्वारा व्यक्त किया गया है जिसमें OP कीमत पर वस्तु की OQ मात्रा बाजार मांग को व्यक्त करती है। वस्तु की कीमत के बढ़ने पर वस्तु की मांग कम हो जाती है विभिन्न कीमत स्तरों पर वस्तु की मांग को दर्शाने वाला DD माँग वक्र बाजार मांग को व्यक्त करता है। मांग वक्र का ऋणात्मक ढ़ाल बाजार में मांग की प्रवृत्ति को दर्शाता है।

(ब) पूर्ति पक्ष :–

किसी वस्तु का मूल्य कितना होगा? किसी वस्तु की पूर्ति क्यों की जाती है? वस्तु की पूर्ति के लिये कितना मूल्य लिया जाता है? इत्यादि प्रश्नों की विवेचना करने से स्पष्ट होता है कि उत्पादक को उत्पादन करने में लागत वहन करनी पड़ती है जिसे प्राप्त करने हेतु उत्पादक वस्तु की पूर्ति के लिये मूल्य प्राप्त करना चाहता है। उत्पादक अपनी वस्तु का मूल्य अल्पकाल में सीमान्त लागत से कम नहीं कर सकता जबकि दीर्घकाल में मूल्य औसत परिवर्तनशील के बराबर होना चाहिये अन्यथा उत्पादक उत्पादन बन्द कर देगा। स्पष्ट है कि वस्तु की सीमान्त लागत उसके मूल्य की निम्नतम सीमा को व्यक्त करती है।

एक उत्पादक निश्चत समय पर विभिन्न कीमतों पर वस्तु की अलग–अलग मात्रायें बेचने को तत्पर होता है जो उसकी पूर्ति अनुसूची कहलाती है। बाजार के समस्त व्यक्तिगत उत्पादकों की पूर्ति अनुसूचियों का योग करने पर बाजार की पूर्ति अनुसूची (तालिका) प्राप्त हो जाती है।

तालिका 13.2 बाजार पूर्ति अनुसूची

वस्तु की कीमत रू.	विभिन्न उत्पादकों द्वारा योग पूर्ति (इकाइयों में)			बाजार पूर्ति
	A	B	C	
05	0	1	1	2
10	0	2	3	5
15	1	3	5	9
20	3	5	7	15
25	5	8	10	23
30	8	10	13	31

तालिका की व्याख्या :–

बाजार में तीन उत्पादकों की मान्यता ली गई है। इस मान्यता पर आधारित बाजार बताई गई पूर्ति अनुसूची द्वारा यह स्पष्ट है कि वस्तु की कीमत बढ़ने पर विभिन्न उत्पादकों द्वारा वस्तु की पूर्ति बढ़ायी जाती है जिनका योग करने से 2 बाजार पूर्ति प्राप्त होता है। अर्थात कीमतें बढ़ने पर पूर्ति भी बढ़ जाती है। वस्तु की कीमत एवं बाजार पूर्ति में सीधा एवं प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।

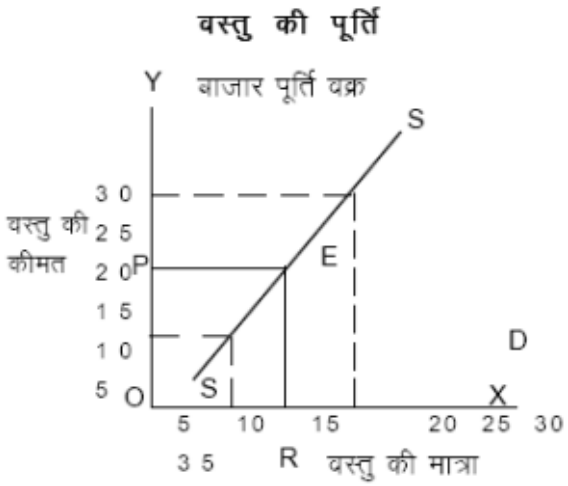

रेखाचित्र 13.2

रेखाचित्र :– विक्रेताओं द्वारा वस्तु की पूर्ति को क्रमशः A,B,C रेखाचित्रों द्वारा दर्शाया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि प्रत्येक उत्पादक के पूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक है।

रेखाचित्र 13.2 की व्याख्या :–

रेखाचित्र 13.2 में OX अक्ष पर वस्तु की मात्रा तथा OY अक्ष पर वस्तु की कीमत को दर्शाया गया है। रेखाचित्र से स्पष्ट हैं कि OP कीमत पर बाजार में OQ वस्तु की पूर्ति की जाती है जिसे बाजार पूर्ति कहा जाता है। कीमत के बढ़ने पर उत्पादक वस्तु की पूर्ति में भी वृद्विकरते है अर्थात जैसे–जैसे कीमत बढ़ती है तो पूर्ति भी बढ़ने लगती है कीमत एवं वस्तु की पूर्ति में सीधा सम्बन्ध होता है अतः पूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक होता है।

मांग व पूर्ति का सन्तुलन :–

मांग पक्ष के विश्लेषण से स्पष्ट है कि वस्तु की सीमान्त उपयोगिता उसके मूल्य की उच्चतम सीमा होती है जबकि पूर्ति पक्ष के विश्लेषण से स्पष्ट है कि वस्तु की सीमान्त लागत उसके मूल्य की निम्नतम सीमा होती है वस्तु का वास्तविक मूल्य इन्ही दो सीमाओं के बीच उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ पर उस वस्तु की मांग व पूर्ति बराबर हो जाये। क्रेता यह चाहता है कि वह कम से कम मूल्य चुकाये जबकि विक्रेता अधिक से अधिक मूल्य प्राप्त करना चाहता है अतः मांग व पूर्ति के साम्य बिन्दु पर वास्तविक कीमत निर्धारित होती है जहाँ पर क्रेता व विक्रेता दोनो सन्तुष्ट होते हैं। उस साम्य बिन्दु पर निर्धारित कीमत को ही ''साम्य कीमत'' या सन्तुलन मूल्य कहा जाता है और इस कीमत पर निर्धारित वस्तु की मात्रा को ''साम्य मात्रा'' या सन्तुलन मात्रा कहा जाता है।

तालिका 13.3 साम्य कीमत का निर्धारण

X वस्तु की कीमत	X वस्तु की माँग	X वस्तु की पूर्ति
5	25	2
10	22	5
15	18	9
20	15	15
25	9	23
30	6	31

तालिका की व्याख्या :–

तालिका 13.3 से स्पष्ट है कि X वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी माँग कम हो जाती है जबकि वस्तु की पूर्ति में वृद्वि हो जाती है। तालिका में साम्य कीमत 20 रू. पर वस्तु की मांग व पूर्ति दोनो बराबर 15–15 इकाइयाँ है। अतः 20 रू. साम्य कीमत कहलायेगी।

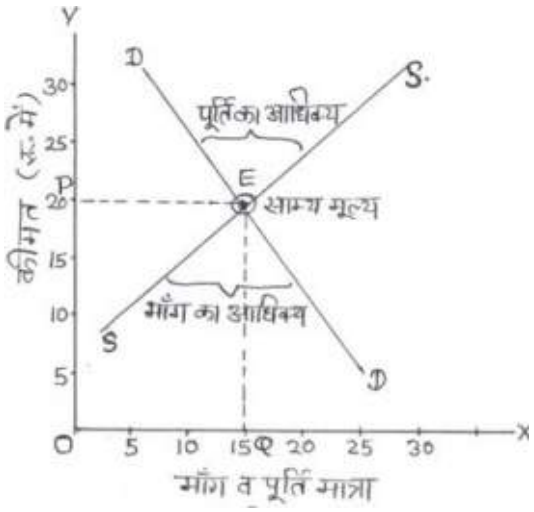

रेखाचित्र 13.3

रेखाचित्र की व्याख्या :–

उपरोक्त रेखाचित्र में OX अक्ष पर वस्तु की मांग व पूर्ति दर्शायी गयी है जबकि OY अक्ष पर वस्तु की कीमत को दर्शाया गया है। DD वक्र मांग को व्यक्त करता है जबकि वक्र वस्तु की पूर्ति का वक्र है। मांग व पूर्ति वक्र दोनों एक दूसरे को E बिन्दु पर काटते हैं अतः वस्तु की कीमत OP निर्धारित हो जाती है वस्तु की निर्धारित OQ मात्रा साम्य मात्रा कहलाती है। E बिन्दु पर निर्धारित कीमत ही साम्य कीमत है। जब वस्तु की कीमत 20 रू. है तो इस कीमत पर मांग व पूर्ति दोनों बराबर–बराबर 15 इकाइयाँ है। अतः E साम्य बिन्दु है जिस पर मांग पर पूर्ति बराबर हो जाती है।

पूर्ति का आधिक्य –

रेखाचित्र से स्पष्ट हैं कि वस्तु की मांग की तुलना में उसकी पूर्ति अधिक है तो उसे पूर्ति का आधिक्य माना जाता है अर्थात वस्तु की पूर्ति उसकी मांग की अपेक्षा अधिक है।

मांग का का आधिक्य –

रेखाचित्र से स्पष्ट हैं कि वस्तु की पूर्ति की अपेक्षा उसकी मांग अधिक है तो उसे मांग का आधिक्य माना जाता है ।

(ब) मांग व पूर्ति में परिवर्तन का सन्तुलन पर प्रभावः–

मांग व पूर्ति की दशाओं में परिवर्तन होने पर सन्तुलन पर क्या प्रभाव होगा, यह निम्नानुसार समझा जा सकता है–

(1) मांग में परिवर्तन का सन्तुलन पर प्रभाव :–

किसी वस्तु की मांग उपभोक्ताओं की आय, रुचि, स्वभाव, फैशन, अधिमान, समय का प्रभाव इत्यादि कारणों से परिवर्तित हो सकती है। जब किसी वस्तु की पूर्ति व अन्य परिस्थितियाँ स्थिर रहे किन्तु वस्तु की माँग में किसी कारण से वृद्वि हो जाये तो सन्तुलन भी प्रभावित होगा और साम्य कीमत बढ़ जाती है जबकि इसके विपरीत किसी भी कारण से वस्तु की मांग में कमी होने पर साम्य कीमत भी घट जाती है। स्पष्ट है कि पूर्ति के अपरिवर्तित रहने पर मांग में वृद्वि होने पर वस्तु का मूल्य तथा विक्रय मात्रा दोनों में वृद्विहोती है जबकि इसके विपरीत माँग में कमी होने पर वस्तु के मूल्य तथा विक्रय मात्रा दोनों में कमी हो जाती है।

(a) *मांग में वृद्वि का प्रभाव–*

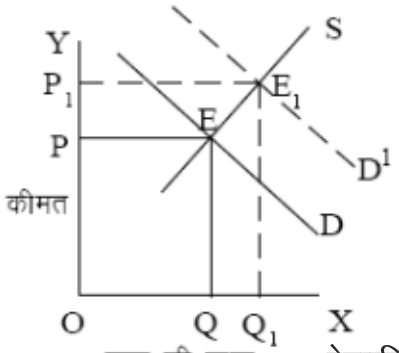

रेखाचित्र 13.4

उक्त रेखाचित्र से स्पष्ट है कि माँग व पूर्ति के साम्य से निर्धारित कीमत OP है वस्तु की माँग बढने पर माँग वक्र के खिसकने से नया माँग वक्र D_1D_1 प्राप्त होता है जिससे नया साम्य E_1 बिन्दु पर निर्धारित हो जाता है अतः वस्तु की कीमत भी बढ़कर OP_1 हो जाती है।

(b) *मांग में कमी का प्रभाव–*

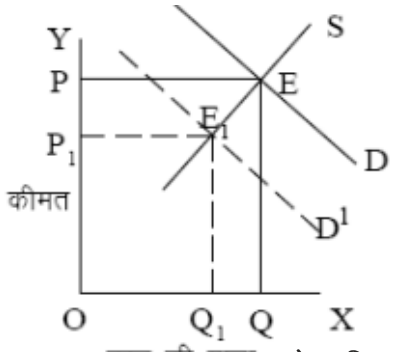

रेखाचित्र 13.5

रेखाचित्र से स्पष्ट है कि एक बार साम्य स्थापित होने के बाद यदि वस्तु की माँग में किसी भी कारण से कमी हो जाये तो माँग वक्र नीचे खिसक जाता है जिसके कारण नया साम्य E_1 बिन्दु पर निर्धारित होता है अतः वस्तु की कीमत भी घटकर Op_1 रह जाती है।

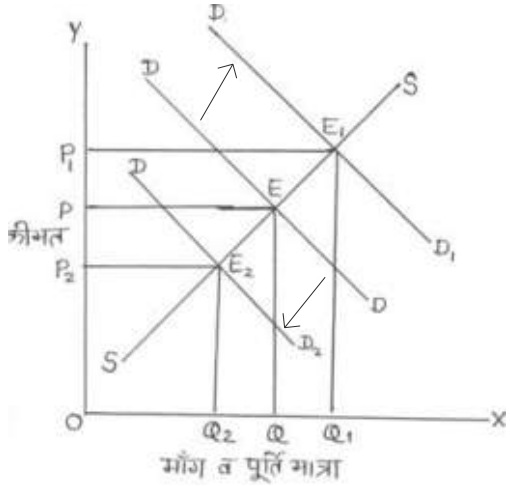

रेखाचित्र 13.6

रेखाचित्र की व्याख्या :– रेखाचित्र में OX अक्ष पर वस्तु की माँग व पूर्ति तथा OY अक्ष पर कीमत को दर्शाया गया है। माँग व पूर्ति का प्रारम्भिक साम्य E बिन्दु पर स्थापित हो जाता है अतः OP कीमत तथा OQ साम्य मात्रा है। अन्य बातों के समान रहने पर वस्तु की माँग बढ़ने पर साम्य कीमत बढ़ जाती है तथा माँग घटने पर साम्य कीमत भी कम हो जाती है।

(2) पूर्ति में परिर्वतन का सन्तुलन पर प्रभाव :–

किसी वस्तु की पूर्ति में अनेक कारणों से परिवर्तन हो सकते हैं जैसे–

(अ) उत्पादन की लागतों में परिवर्तन होने पर पूर्ति भी परिवर्तित हो जाती है। लागत बढ़ने पर पूर्ति कम तथा लागत घटने पर पूर्ति अधिक हो जाती है।

(ब) नये–नये अविष्कार होने से वस्तु की पूर्ति प्रभावित होती है नई प्रतिस्थापन वस्तु का प्रयोग बढ़ने से पुरानी वस्तु की पूर्ति में कमी आ जाती है।

(स) तकनीकी बदलाव वस्तु के उत्पादन स्तर में परिवर्तन के द्वारा पूर्ति को प्रभावित करता है।

(द) कच्चे माल के नवीन स्त्रोतो की खोज, वस्तु की पूर्ति को बढ़ा देती है।

(ड) उत्पादक के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने से पूर्ति पक्ष प्रभावित होता है।

(ण) सरकारी नीतियों में परिवर्तन वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करता है।

यदि वस्तु की मांग व अन्य तत्व स्थिर रहे किन्तु वस्तु की पूर्ति में वृद्धि हो जाये तो वस्तु का मूल्य घट जाता है एवं वस्तु की विक्रय मात्रा बढ़ जाती है जबकि इसके विपरीत यदि वस्तु की पूर्ति कम हो जाये तो उस वस्तु का मूल्य बढ़ जाता है तथा विक्रय की मात्रा कम हो जाती है।

(a) *पूर्ति में वृद्धि का प्रभाव–*

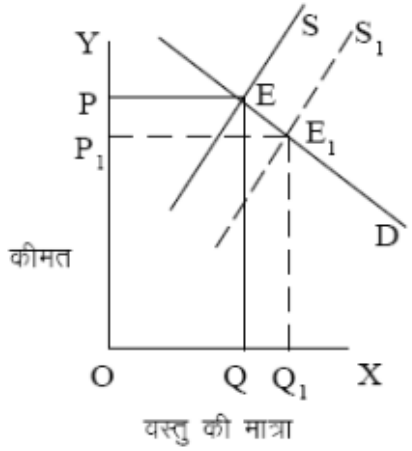

रेखाचित्र 13.7

रेखाचित्र से स्पष्ट है कि वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन होने से संतुलन प्रभावित होता है। वस्तु की पूर्ति बढ़ने पर पूर्ति वक्र खिसककर S_1S_1 हो जाता है जिससे नया साम्य E_1 बिन्दु पर प्राप्त होता है अतः वस्तु की कीमत घटकर OP_1 रह जाती है।

(a) *पूर्ति में कमी का प्रभाव–*

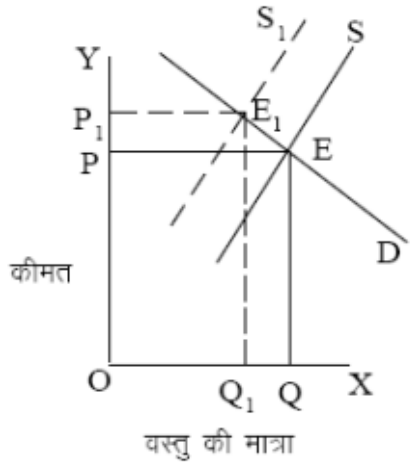

रेखाचित्र 13.8

उपरोक्त रेखाचित्र से यह प्रदर्शित होता है कि वस्तु की पूर्ति घट जाने पर पूर्तिवक्र विवर्तित होकर S_1S_1 हो जाता है जिससे साम्य बिन्दु E खिसककर E_1 पर प्राप्त होता है।अतः वस्तु की कीमत भी बढ़कर Op_1 हो जाती है।

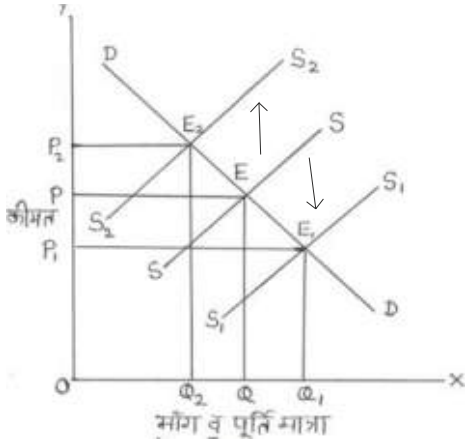

रेखाचित्र 13.9

उपरोक्त रेखाचित्र में मांग व पूर्ति का प्रारम्भिक साम्य E बिन्दु पर है जहाँ पर माँग वक्र व पूर्ति वक्र एक दूसरे को काटते है। OP साम्य कीमत एवं OQ साम्य मात्रा को दर्शाता है। वस्तु की पूर्ति बढ़ने पर पूर्ति वक्र दाहिनी और खिसक कर S_1S_1 हो जाता है जिससे नया साम्य E_1 बिन्दु पर स्थापित हो जाता है और कीमत घटकर OP_1 तथा पूर्ति मात्रा बढ़कर OQ_1 हो जाती है। जबकि वस्तु की पूर्ति कम होने पर पूर्ति वक्र बाँयी और खिसक कर S_2S_2 हो जाता है और नया साम्य E_2 बिन्दु पर स्थापित हो जाता है और कीमत बढ़कर OP_2 तथा पूर्ति मात्रा घटकर OP_2 रह जाती है।

स्पष्ट है कि वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन से उसके साम्य मूल्य में विपरीत दिशा में परिवर्तन होता है, पूर्ति बढ़ने पर साम्य कीमत घटती है जबकि पूर्ति घटने पर साम्य कीमत बढ़ती है।

(3) मांग व पूर्ति दोनों में एक साथ परिवर्तन होने पर साम्य कीमत पर प्रभाव :–

जब किसी वस्तु की मांग व पूर्ति दोनों में एक साथ परिवर्तन हो तो साम्य कीमत भी प्रभावित होगी। माँग व पूर्ति दोनों शक्तियो में परिवर्तन का साम्य कीमत पर संयुक्त प्रभाव पड़ता है। यदि माँग में परिवर्तन पूर्ति के परिवर्तन की अपेक्षा अधिक है तो साम्य कीमत पर माँग पक्ष का प्रभाव अधिक होगा। जबकि इसके विपरीत पूर्ति में परिवर्तन माँग के परिवर्तन की अपेक्षा अधिक हो तो साम्य कीमत पर पूर्ति पक्ष का प्रभाव अधिक होगा।

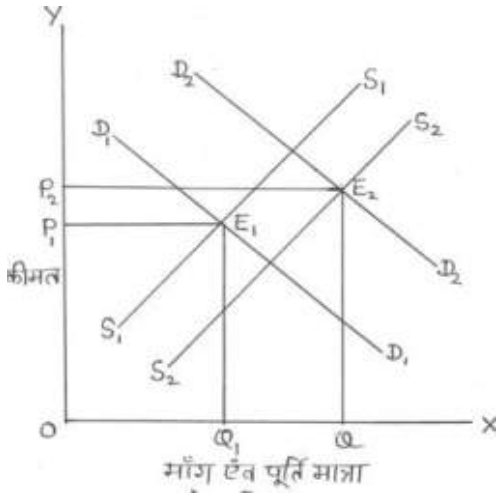

रेखाचित्र 13.10

रेखाचित्र की व्याख्या :–

वस्तु की प्रारम्भिक माँग $D_1 D_1$ तथा प्रारम्भिक पूर्ति S_1S_1 है। साम्य बिन्दु E_1 है जिससे वस्तु की साम्य कीमत OP_1 तथा साम्य मात्रा OQ_1 निर्धारित हो जाती है। वस्तु की माँग में वृद्विहोने के कारण मांग वक्र ऊपर खिसककर D_2D_2 हो जाता है तथा पूर्ति में वृद्विहोने के पश्चात् पूर्ति वक्र S_2S_2 हो जाता है। जिससे मांग व पूर्ति का नया साम्य बिन्दु E_2 पर प्राप्त होता है। अतः मांग व पूर्ति में परिवर्तन के पश्चात् वस्तु की कीमत बढ़कर OP_2 निर्धारित हो जाती है और वस्तु की मात्रा OX_2 निर्धारित होती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि यदि वस्तु की मांग व पूर्ति दोनो बढ़ते हैं तो साम्य कीमत पर प्रभाव उनके संयुक्त प्रभाव पर निर्भर होगा। वस्तु की मांग एवं पूर्ति में कमी या वृद्वि हो सकती है। दोनो पक्षों में से एक पक्ष में भी परिवर्तन हो जाने पर नया साम्य स्थापित हो जाता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- जिस बिन्दु पर वस्तु की मांग व पूर्ति एक दूसरे के बराबर हो जाती है, उसे साम्य बिन्दु कहा जाता है।
- एक वस्तु का मूल्य निर्धारण उसकी मांग व पूर्ति के साम्य द्वारा ही होता है।
- एक वस्तु की बाजार मांग वक्र का ढ़ाल सामान्यतया ऋणात्मक होता है।
- एक वस्तु की बाजार पूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक होता है।
- किसी एक वस्तु की कीमत बढ़ने पर उस वस्तु की मांग कम हो जाती है।
- किसी वस्तु की कीमत घटने पर उस वस्तु की मांग बढ़ जाती है।
- एक वस्तु की पूर्ति बढ़ने पर सामान्यतया उस वस्तु की कीमत कम हो जाती है।
- एक वस्तु की पूर्ति घटने पर सामान्यतया उस वस्तु की कीमत बढ़ जाती है।
- विभिन्न व्यक्तिगत मांग का योग बाजार मांग कहलाता है।
- सभी व्यक्तिगत पूर्ति अनुसूचियो के योग को बाजार पूर्ति अनुसूची कहते है।
- एक वस्तु की कीमत एवं उसकी मांग के बीच ऋणात्मक सम्बन्ध होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) वस्तु की कीमत व बाजार मांग के बीच सम्बन्ध होता है–
(अ) धनात्मक
(ब) ऋणात्मक
(स) शून्य
(द) कोई सम्बन्ध नहीं ( )

(2) साम्य कीमत पर सन्तुष्ट होते हैं –
(अ) क्रेता व विक्रेता दोनों
(ब) केवल क्रेता
(स) केवल विक्रेता
(द) क्रेता व विक्रेता दोनों में से कोई नहीं ( )

(3) किसी वस्तु की मांग का मुख्य कारण है –
(अ) मुद्रा की पूर्ति
(ब) वस्तु की पूर्ति
(स) आवश्यकता सन्तुष्ट करने का गुण
(द) वस्तु की उपलब्धता ( )

(4) एक उत्पादक वस्तु का उत्पादन किस उद्देश्य से करता है–
(अ) सामाजिक सेवा हेतु
(ब) आत्म सन्तुष्टि हेतु
(स) लाभ कमाने हेतु
(द) प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु ( )

(5) किसी वस्तु की पूर्ति बढ़ने पर पूर्ति वक्र –
(अ) दाँयी तरफ खिसकता है।
(स) बाँयी तरफ खिसकता है।

(स) स्थिर रहता है।

(द) कहीं भी खिसक सकता है। ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

(1) प्रो. जे.के. मेहता द्वारा दी गई 'साम्य' की परिभाषा दीजिये।

(2) किसी वस्तु का मूल्य किन दो घटकों द्वारा निर्धारित होता है?

(3) बाजार सन्तुलन से आपका क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

(4) 'बाजार मांग' से क्या अभिप्राय है? समझाइये।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

(1) वस्तु की पूर्ति परिवर्तन के लिये तीन कारक लिखो।

(2) पूर्ति वक्र को रेखाचित्र द्वारा दर्शाइये।

(3) पूर्ति अनुसूची किसे कहते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न–

(1) एक काल्पनिक बाजार मांग तालिका का निर्माण कीजिये, एवं इसे रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

(2) 'मांग में परिवर्तन से साम्य कीमत प्रभावित होती है' इस कथन को रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

(3) मांग व पूर्ति के सन्तुलन को रेखाचित्र व अनुसूची द्वारा समझाओ।

(4) बाजार सन्तुलन की व्याख्या कीजिये। पूर्ति में परिवर्तन का इस साम्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
ब	अ	स	स	अ